Research Scholar : Farheen Naaz
Supervisor : Dr. Asif Umar
Department : Hindi
Title : Prawasi Katha-Sahitya Mein Nihit Vibhinn Sanskritiyon Ke Madhya Takrav Ka Vishleshnatmak Adhyayan (1990 - Ab tak)
Viva Voce – Date : 30/05/2022

मानव जाति की एक विशेष प्रवृत्ति गतिशीलता है। यह प्रवृत्ति मनुष्य को एक स्थान पर रहने नहीं देती। उसे निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर करती है। मानव जाति किसी भी बेहतर वस्तु को देखकर आकर्षित होती है। जो देश आर्थिक रूप से संपन्न होता है व्यक्ति स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित होता है। यही कारण है कि भारतीय नागरिकों ने अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए विदेशों को चुना।

भारत का विदेशों से संबंध का इतिहास बहुत पुराना है। आर्थिक संपन्नता और उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु भारतीयों ने विदेशों में प्रवास किया। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले प्रवास ज़बरन हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दी में प्रवास ब्रिटिशों की देन था। ब्रिटिश उपनिवेशीय हज़ारों की संख्या में भारतीय मज़दूरों को अपने साथ विदेश ले गये थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीयों ने उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु अपनी इच्छा से प्रवास करना आरंभ किया।

प्रवासी साहित्य लेखन की दो पीढ़ियाँ रही हैं। पहली पीढ़ी का साहित्य लेखन मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद जैसे देशों में हुआ। पहली पीढ़ी के साहित्यकार गिरमिटिया मज़दूरों की संतानों में से थे। दूसरी पीढ़ी के साहित्यकार अपनी इच्छा से विदेश गये थे। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने भोगे हुए यथार्थ को अपने लेखन का विषय बनाया।

विश्व के हर कोने में आज हिंदी में साहित्य रचना हो रही है। भारत से दूर विदेश में रहकर प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने विदेशी रहन-सहन को भले ही अपनाया हो किंतु

उनकी भारतीयता कहीं समाप्त नहीं हुई है। यही कारण है कि प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने विदेश को तो अपनाया किंतु हिंदी भाषा को विदेशों में समृद्ध भी किया।

शोध अध्ययन में प्रवासी जीवन की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए दो संस्कृतियों के टकराव को भी प्रस्तुत किया गया है। कोई भी व्यक्ति विदेशी संस्कृति को एकदम से अपना नहीं पाता। पराये देश में वह दोहरी मानसिकता में जीता है।

प्रवासी हिंदी साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है क्योंकि यह साहित्य संपूर्ण विदेशी परिवेश को अपने में आत्मसात किये हुए है। अतः प्रवासी साहित्य अत्यंत विस्तृत और संपन्न साहित्य है। इसके अध्ययन हेतु पाठक विदेशी जीवन के अनुभवों से संवेदनात्मक रूप से जुड़ सकते है।